SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन

राघवेन्द्र सिंह सिकरवार, (Ph.D.), शिक्षा विभाग
संत योगी मान सिंह शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
राघवेन्द्र सिंह सिकरवार, (Ph.D.), शिक्षा विभाग
संत योगी मान सिंह शिक्षा महाविद्यालय,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/05/2022
Revised on : -----
Accepted on : 02/06/2022
Plagiarism : 03% on 26/05/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 3%

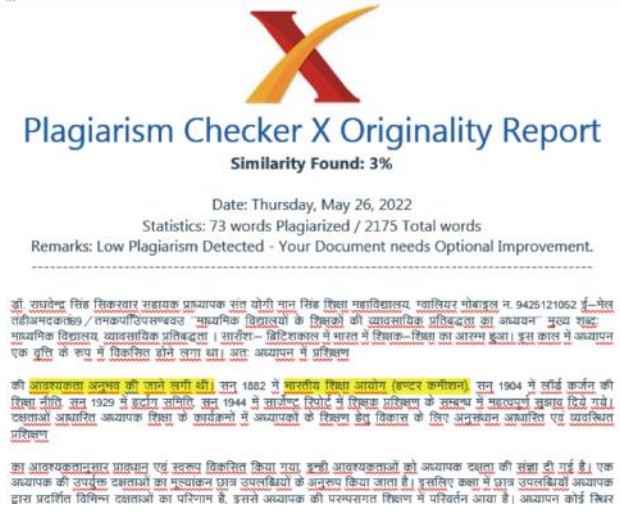

Date: Thursday, May 26, 2022
Statistics: 73 words Plagiarized / 2175 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

डॉ. राघवेन्द्र सिंह सिकरवार सहायक प्राध्यापक संत योगी मान सिंह शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर मोबाइल न. 9425121052 ई–मेल तंहीअमदकतं69 / तमकपाँिपसण्बवउ "माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन" मुख्य शब्द: माध्यमिक विद्यालय, व्यावसायिक प्रतिबद्धता । सारांश– ब्रिटिशकाल में भारत में शिक्षक–शिक्षा का आरम्भ हुआ। इस काल में अध्यापन एक वृत्ति के रूप में विकसित होने लगा था। अतः अध्यापन में प्रशिक्षण

की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी थी। सन् 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन), सन् 1904 में लॉर्ड कर्जन की शिक्षा नीति, सन् 1929 में हर्टाग समिति, सन् 1944 में सार्जेण्ट रिपोर्ट में शिक्षक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। दक्षताओं आधारित अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों में अध्यापकों के शिक्षण हेतु विकास के लिए अनुसंधान आधारित एवं व्यवस्थित प्रशिक्षण

का आवश्यकतानुसार प्रावधान एवं स्वरूप विकसित किया गया, इन्हीं आवश्यकताओं को अध्यापक दक्षता की संज्ञा दी गई है। एक अध्यापक की उपर्युक्त दक्षताओं का मूल्यांकन छात्र उपलब्धियों के अनुरूप किया जाता है। इसलिए कक्षा में छात्र उपलब्धियाँ अध्यापक द्वारा प्रदर्शित विभिन्न दक्षताओं का परिणाम है, इससे अध्यापक की परम्परागत शिक्षण में परिवर्तन आया है। अध्यापन कोई स्थिर

शोध सार

ब्रिटिशकाल में भारत में शिक्षक–शिक्षा का आरम्भ हुआ। इस काल में अध्यापन एक वृत्ति के रूप में विकसित होने लगा था। अतः अध्यापन में प्रशिक्षण की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी थी। सन् 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन), सन् 1904 में लॉर्ड कर्जन की शिक्षा नीति, सन् 1929 में हर्टाग समिति, सन् 1944 में सार्जेण्ट रिपोर्ट में शिक्षक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। दक्षताओं आधारित अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों में अध्यापकों के शिक्षण हेतु विकास के लिए अनुसंधान आधारित एवं व्यवस्थित प्रशिक्षण का आवश्यकतानुसार प्रावधान एवं स्वरूप विकसित किया गया, इन्ही आवश्यकताओं को अध्यापक दक्षता की संज्ञा दी गई है। एक अध्यापक की उपर्युक्त दक्षताओं का मूल्यांकन छात्र उपलब्धियों के अनुरूप किया जाता है। इसलिए कक्षा में छात्र उपलब्धियाँ अध्यापक द्वारा प्रदर्शित विभिन्न दक्षताओं का परिणाम है, इससे अध्यापक की परम्परागत शिक्षण में परिवर्तन आया है। अध्यापन कोई स्थिर व्यवसाय नहीं है बल्कि प्रौद्योगिकी, सदैव बदलते ज्ञान, वैश्विक अर्थशास्त्र के दबावों और सामाजिक दबावों से प्रभावित होकर बदलता रहता है। इसका मतलब है कि इन परिवर्तनों को संबोधित करने के लिए अध्यापन के तरीकों और कौशलों का लगातार अद्यतन और विकास आवश्यक है। शिक्षकों का बदलाव की क्षमता से युक्त होना अनिवार्य है।

मुख्य शब्द

माध्यमिक विद्यालय, व्यवसायिक प्रतिबद्धता.

प्रस्तावना

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग– शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम हैं, शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी शिक्षक होता है। उसके

निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी ज्ञानार्जन की उचित दिशा का अनुसरण नही कर सकता। पाठ्यक्रम को सरल और बोधगम्य बनाने में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है। शिक्षक, शिक्षा प्रकिया को देश–काल के अनुरूप सही दिशा प्रदान करते हैं। एक शिक्षक की भूमिका निर्धारित पाठ्यक्रम को समाप्त करने से लेकर भावी नागरिको के सर्वांगीण विकास तक होती है। इस प्रकार व्यक्ति निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण की प्रकिया में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसी कारण गुरू को प्राचीन काल से ही देवत्व से भी उच्च स्थान प्रदान किया गया हैः

"गुरू ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरूः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः"

डॉ. राधाकृष्णन के विचारानुसारः "समाज में शिक्षक का कथन अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं तथा शिक्षण कौशलों के हस्तान्तरण के उपक्रम के रूप में सभ्यता के प्रकाश को प्रकाशित रखने में सहायक होता है।"

स्वतन्त्र भारत में शिक्षक प्रशिक्षण के स्थान पर शिक्षक–शिक्षा शब्द का प्रयोग किया जाता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में शिक्षक–शिक्षा की सुविधाएँ बढ़ी। विभिन्न शिक्षा आयोगों का गठन किया गया, प्रत्येक में शिक्षक–शिक्षा के विषय में सुझाव दिये गये। अध्यापक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा कार्यक्रम का एक आवश्यक भाग है, जिसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षण हेतु प्रभावी एवं कौशल युक्त अध्यापक तैयार करना है इसलिए 1970 के दशक में दक्षता आधारित अध्यापक शिक्षा प्रारम्भ की गई, इसको 1960 के आस–पास उपलब्धता आधारित अध्यापक शिक्षा की संज्ञा दी गई थी।

व्यवसायिक अधिगम और विकास Professional Learning Development (पीएलडी) का संबंध किसी भी व्यक्ति की अपने काम या प्रैक्टिस से संबंधित ज्ञान और कौशल अर्जित करने की क्षमता से या जानकारी की तलाश करने और अपने व्यावसायिक क्षेत्र में स्वयं को सुविज्ञ बनाए रखने से है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एनसीएफटीई, 2009) के अनुसार, शिक्षकों के पीएलडी के लिए मुख्य लक्ष्य हैंः अपनी खुद की परिपाटी का अन्वेषण, उस पर चिंतन–मनन और विकास करना। अपने शैक्षणिक अनुशासन या विद्यालयी पाठ्यक्रम के अन्य क्षेत्रों के बारे में अपने ज्ञान को गहन करना और अद्यतित करना। विद्यार्थियों और उनकी शिक्षा पर शोध और चिंतन करना। शैक्षणिक और सामाजिक मुद्दों को समझना और अद्यतित करना। शिक्षा अध्यापन से व्यवसायिक रूप से जुड़ी अन्य भूमिकाओं के लिए तैयारी करना, जैसे अध्यापकों की शिक्षा, पाठ्यचर्या विकास या परामर्श बौद्धिक अलगाव से बाहर निकलना और कार्यस्थल में अन्य लोगों, विशिष्ट विषयों के क्षेत्र में काम कर रहे शिक्षकों और शिक्षाविदों और साथ ही निकटतम वृहद् समाज में बुद्धिजीवियों के साथ अनुभव और अंतदृ र्ष्टियाँ साझा करना।

एससीईआरटी DIETs के साथ मिलकर शिक्षकों के लिए अधिकांश (यदि सभी नहीं तो) आधिकारिक पीएलडी उपलब्ध कराने के लिए काम करता है। यह काम आम तौर पर विशेष रूप से आयोजित कार्यशालाओं में किया जाता है, जहाँ व्यक्तिगत उपस्थिति आवश्यक होती है।

दक्षता आधारित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अध्यापकों में शिक्षण हेतु विकास के लिए अनुसंधान आधारित एवं व्यवस्थित प्रशिक्षण का आवश्यकतानुसार प्रावधान एवं स्वरूप विकसित किया गया। इन्ही आवश्यकताओं को अध्यापक दक्षता की संज्ञा दी गई जिसके पाँच प्रमुख वर्ग निर्धारित किए गयेः

(1) संज्ञानात्मक आधारित दक्षताएँ।
(2) उपलब्धि आधारित दक्षताएँ।
(3) क्रमबद्धता आधारित दक्षताएँ।
(4) भावनात्मक दक्षताएँ।
(5) अनुसंधान (खोज) दक्षताएँ।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने प्रत्येक स्तर की शिक्षा के लिए अध्यापको में दक्षताओं को पहचाना है तथा उन्हें विकसित करने का प्रयास सेवा पूर्ण एवं सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।

शोध कार्य के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैः

1. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता की तुलना करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के स्कूलों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता की तुलना करना।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता की तुलना करना।

शोध कार्य की परिकल्पनाऐं

शोध समस्या के समाधान हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैः

1. माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के स्कूलों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श तालिका

तालिका क्रमांक 1

क्षेत्र	पुरुष शिक्षकों की संख्या	महिला शिक्षिकाओं की संख्या	महायोग
शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित	50	50	100
ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित	50	50	100
शासकीय माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित	50	50	100
अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित	50	50	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

परिसीमन

1. शोध अध्ययन को ग्वालियर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन को माध्यमिक स्तर के शिक्षक/शिक्षिकाओं तक सीमित रखा गया हैं।
3. शोध अध्ययन को शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 100 शिक्षक/शिक्षिकाओं (जिसमें 50 शिक्षक व 50 शिक्षिकाऐं) एवं ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 100 शिक्षक/शिक्षिकाओं (जिसमें 50 शिक्षक व 50 शिक्षिकाऐं) सम्मिलित किये गये हैं तथा शासकीय माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित 100 शिक्षक/शिक्षिकाओं (जिसमें 50 शिक्षक व 50 शिक्षिकाऐं) एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित 100 शिक्षक/शिक्षिकाओं (जिसमें 50 शिक्षक व 50 शिक्षिकाऐं) सम्मिलित किए गये हैं, तक सीमित रखा गया है।

प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. रविंद्र कौर और सरबजीत कौर द्वारा विकसित और मानकीकृत व्यवसायिक प्रतिबद्धता पैमाने का उपयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधार्थी ने मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक त्रुटि, क्रांतिक अनुपात, स्वतंत्रता अंश एवं सार्थकता स्तर का प्रयोग किया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना–1: माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक 2

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	S.Ed.	C.R.	विश्वास स्तर	
माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षक	**200**	**16.80**	**6.00**	**0.60**	**2.80**	**0.05**	**1.97**
माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकाऐं	**200**	**18.48**	**5.95**			**0.01**	**2.59**

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 16.80 एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 18.48 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.80 है जो 398 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.59 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पुरुष शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता से उच्च है।

परिकल्पना 2: माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के स्कूलों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक 3

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	S.Ed.	C.R.	विश्वास स्तर	
शहरी क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाऐं	**100**	**15.62**	**5.80**	**0.62**	**2.95**	**0.05**	**1.97**
ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाऐं	**100**	**17.45**	**6.45**			**.01**	**2.60**

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 15.62 एवं माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 17.45 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.95 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता, ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता से उच्च है।

परिकल्पना 3: शासकीय माध्यमिक विद्यालयों एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

तालिका क्रमांक 4

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	S.Ed.	C.R.	विश्वास स्तर	
शासकीय विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाऐं	**100**	**16.21**	**5.90**	**1.25**	**0.94**	**0.05**	**1.97**
अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाऐं	**100**	**17.39**	**6.60**			**.01**	**2.60**

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 16.21 एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 17.39 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 0.94 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 से कम है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता समान है।

निष्कर्ष

प्रदत्तों के विष्लेशण एवं उनकी व्याख्या के उपरान्त यह जानने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न होती है कि सम्बन्धित समस्या पर आधारित शोध कार्य की उपलब्धियाँ व निष्कर्ष क्या हैं? शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार प्रस्तुत हैं:

परिकल्पना 1: माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 16.80 एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 18.48 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.80 है जो 398 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.59 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पुरुष शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता से उच्च है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् पुरुष शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 2: माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के स्कूलों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 15.62 एवं माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 17.45 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.95 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता, ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता से उच्च है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 3: शासकीय माध्यमिक विद्यालयों एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 16.21 एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान 17.39 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 0.94 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 से कम है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता समान है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई, अर्थात् शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षक/शिक्षिकाओं की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सन्दर्भ सूची

1. कुमारी प्रियंका, उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन, *Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language.*
2. कुशवाहा सुनील कुमार, अग्रवाल रीना, उच्च शिक्षा के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन, *Golden Research Thoughts*, Volume - 6, Issue - 4.
3. सिंह, अरूण कुमार (2005), *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. एनसीएफटीई, 2009

Websites

1. www.google.com
2. www.wikipedia.org

****